प्रातः क्लास 8/1/69 ओम शांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

बाप समझते हैं बच्चों की बुद्धि में यह जरूर होगा कि बाबा, बाप है, टीचर है, सुप्रीम गुरू है। इस याद में .... होंगे। यह याद कब कोई सिखला भी नहीं सकते। कल्प कल्प बाप ही आकर सिखलाते हैं। वही ज्ञान सागर पतित–पावन भी है। वह बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। यह अभी समझाया जाता है जब कि ज्ञान का तीसरा नेत्र दिव्य बुद्धि मिला है। बच्चे भल समझते तो होंगे; परन्तु बाप को ही भूल जाते हैं तो टीचर गुरू .... कैसे या आवेंगे। माया बहुत ही प्रबल है। जो तीन रूपों में महिमा होते हुये भी तीनों को भुला देती है। इतनी सर्वशक्तिवान है। बच्चे भी लिखते हैं बाबा हम भूल जाते हैं और भी 5/6 ऐट्रीब्युट्स हो तो भी भूल गये। माया ऐसी प्रबल है। ड्रामा अनुसार है बहुत सहज। बच्चे समझते हैं ऐसा कब कोई हो नहीं सकता। वही बाप–शिक्षक–सद्गुरु है सच्च2। इसमें गपोड़े आदि की बात नहीं। अन्दर में समझना चाहिए; परन्तु माया भुला देती है। कहते हैं हम हार खाते हैं। यूं तो कदम2 पर तुम्हारी पदम है; परन्तु हार खाते हैं तो पदम कैसे होगी। देवताओं को ही पदम की निशानी देते हैं। सभी को तो नहीं दे सकते। यह ईश्वर की पढ़ाई है। मनुष्य की यह पढ़ाई कब हो नहीं सकती। भल देवताओं की महिमा की जाती है; परन्तु फिर भी ऊंच ते ऊंच एक बाप है। ...की उनकी बड़ाई क्या है। आज आज गदहाई कल फिर राजाई। अभी तुम पुरूषार्थ कर यह बन रहे ...नते हो इस पुरूषार्थ में फेल बहुत होते हैं। पढ़ाई फिर भी इतनी ही है। जितने कल्प पहले पास हुये थे वास्तव में ज्ञान है भी बहुत सहज; परन्तु माया भुला देती है। बाप कहते हैं अपना चार्ट लिखो; परन्तु लिख नहीं पाते हैं। कहां तक बैठ लिखें। अगर लिखते भी हैं तो जांच करते हैं दो घंटा हाईएस्ट। वह भी उन्हों को मालूम पड़ता है जो बाप के श्रीमत को अमल में लाते हैं। बाप तो समझेंगे इन बिचारों लज्जा आती होगी, (न)ही तो श्रीमत अमल में लानी चाहिए; परन्तु 1%, 2% भी मुश्किल लिखते हैं। श्रीमत का इतना रिगार्ड .... बच्चों में। मुरली मिले तभी नहीं पढ़ते हैं। सो भी अच्छे2 महारथी। उन्हों को दिल में लगता जरूर होगा बाबा कहते तो सच्च हैं हम मुरली नहीं पढ़ते हैं तो बाकी औरों को सिखलावे क्या। (याद की यात्रा)

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं बरोबर हम आत्मा हैं। हमको परम पिता परमात्मा पढ़ा रहे हैं और क्या कहते हैं, मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनो। इसमें बाप भी आ गया, पढ़ाने वाला भी आ गया, सद्गति दाता भी आ गया। थोड़े2 अक्षर में सारा ज्ञान आ जा(ता) है। यहां तुम आते ही हो इसको रिवाइज करने लिये। बाप भी यही समझाते हैं। क्योंकि तुम खुद कहते हो हम भूल जाते हैं। इसलिए यहां आते हैं रीवाइज करने। भल कोई रहते भी हैं तो भी रिवाइज नहीं होता है। तकदीर में न है। तदबीर तो बाप कराते हैं। तदबीर कराने वाला एक ही बाप है। इसमें कोई के पास खातरी भी नहीं हो सकती। न एक्स्ट्रा पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई में तो एक्स्ट्रा पढ़ने लिये टीचर को बुलाते हैं। यह तो तकदीर बनाने लिये सभी को एकरस पढ़ाते हैं। एक एक को अलग कहां तक पढ़ावेंगे। कितने ढेर बच्चे हैं। उस पढ़ाई में कोई बड़े आदमी के बच्चे होते हैं, अफोर्ड कर सकते हैं तो उनको एक्स्ट्रा भी पढ़ाते हैं। टीचर जानते हैं कि डल है इसलिये पढ़ाकर उनको स्कॉलरशिप लायक बनाते हैं। यह बाप ऐसे नहीं करते हैं। यह तो सभी (को) एकरस पढ़ाते हैं। वह हुआ टीचर का एक्स्ट्रा पुरू0 कराना। यह तो एक्स्ट्रा पुरू0 किसको अलग कराते नहीं हैं। एक्स्ट्रा पुरू0 माना ही टीचर कुछ कृपा करते हैं। भल ऐसे पैसे लेते हैं। खास टाइम दे पढ़ाते हैं जिससे वह जास्ती पढ़कर होशियार होते हैं। यहां तो जास्ती कुछ पढ़ने की बात ही नहीं। इनकी तो बात ही एक है। एक ही महामंत्र देते हैं। मन्मनाभव का। याद से क्या होता है यह तो समझते हो। बाप ही पतित–पावन है जानते हो उनको याद करने से हम पावन बनेंगे। अभी तुम बच्चों के हाथ है। जितना याद करेंगे उतना ही पावन बनेंगे। यह तो तुम बच्चों के पुरूषार्थ पर है। बेहद के बाप को याद करने से हमको यह (ल0ना0) बनना है। इन्हों ..... महिमा तो हरेक जानते हैं। कहते भी हैं आप पुण्यात्मा हो। हम पापात्माएँ पतित हैं। ढेर मंदिर बने हुये हैं। वहां सभी क्या करने जाते हैं। दर्शन से फायदा कुछ भी नहीं। एक/दो को देखकर चले जाते हैं। बस

(द)र्शन करने जाते हैं। फलाने यात्रा पर जाते हैं। हम भी जावें। इससे होगा क्या। कुछ भी पता नहीं। तुम बच्चों ने .... बहुत ही यात्राएं की हैं; परन्तु नतीजा क्या हुआ है तुम और ही नीचे गिरते गये हो। यात्रा किसलिये है इससे क्या मिलेगा कुछ भी पता नहीं है। जैसे और त्योहार आदि मनाते हैं, वैसे यात्राएं भी एक त्योहार सम(झते) हैं। अभी तुम याद की यात्रा में रहते हो। अक्षर ही एक है मन्मनाभव। .... यह तुम्हारी यात्रा अनादि है। वह .... कहते हैं यह यात्राएं हम अनादि करते आये हैं। अभी तुम ज्ञान सहित कहते हो हम कल्प2 यह यात्रा (कर)ते हैं। बाप ही आकर यह यात्रा सिखलाते हैं। वह चारों धाम जन्म व जन्म यात्रा करते हैं। यहां तो बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। ऐसे तो और कोई कब कहते नहीं हैं कि यात्रा से (ह)म पावन बनेंगे। मुनष्य यात्रा पर जाते हैं तो उस समय पावन रहते हैं। आजकल तो वहां भी गन्द लगा पड़ा (है)। पावन नहीं रहते। हरिद्वार आदि तरफ़ जाओ तो वहां भी वेश्याएं बैठी हैं। बहुत पंडे जाते हैं, यात्रु को ....ाते हैं। इसके साथ फिर वह भी यात्रा (विकार में गिरने की) कराते हैं। जिससे एकदम बेड़ा ही गर्क हो जाता है। वेश्याओं का वहां झुण्ड रहता है। बाबा ने सुना है कंखर जैसे वेश्यालय है। इस रूहानी यात्रा का तो किसको भी पता नहीं है। तुमको अभी बाप ने बताया है। यह सच्ची2 याद की यात्रा है। वह यात्रा का चक्र लगाने जाते फिर वैसे का वैसे ही बन जाते हैं। चक्र लगाते रहते हैं। जैसे वास्को द गामा ने सृष्टि का चक्र लगाया। यह चक्र लगाते हैं ना। गीत भी है ना चारों तरफ़ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे। भक्ति मार्ग में तो कोई मिल नहीं सकते। भगवान कोई को भी मिला नहीं। भगवान से दूर ही रहे। फेरी लगाकर फिर भी घर में आकर विकारों में फंसते हैं। वह सभी यात्राएँ हैं झूठी। अभी तुम बच्चे जानते हो यह है पुरूषोत्तम संगम युग। जबकि .... आये हैं। एक दिन सभी जान जावेंगे बाप आया हुआ है। भगवान आखरीन मिलेंगे कैसे। यह तो कोई भी (जान)ते नहीं। कोई तो समझते हैं कुत्ते में मिलेगा। इनमें भी भगवान है। तब तो ले जाते हैं। जो कुछ कहते, जो (सुनाते) सभी झूठ। झूठ खाना, झूठ पीना। झूठ ही झूठ है। यह है ही झूठ खण्ड। सच्च खण्ड स्वर्ग को कहा जाता है। भारत ही स्वर्ग था। स्वर्ग में भारतवासी ही थे। इसलिये भारतवासी ही स्वर्गवासी, फिर भारतवासी ही नर्कवासी बनते हैं और किसकी हम भेंट नहीं करते हैं। वह तो स्वर्गवासी ही नहीं बनते। यह तुम मीठे2 बच्चे जानते हो। हम श्रीमत पर इस भारत को फिर से स्वर्ग बना रहे हैं। भारत का ही तुम नाम लेंगे। उस समय और कोई धर्म होता ही नहीं। सारी विश्व पवित्र बन जाती है। अभी तो ढेर धर्म हैं। बाप आकर सारी झाड़ का नॉलेज सुनाते हैं। तुमको स्मृति दिलाते हैं। तुम सो देवता थे सो फिर क्षत्रिय सो वैश्य सो शूद्र बने। अभी तुम सो ब्राह्मण बने (हो) ऐसे अक्षर कब कोई संन्यासी उदासी, विद्वान द्वारा सुने हैं? नहीं। यह हम सो का अर्थ बाप कितना समझाते हैं। ओम अर्थात् मैं आत्मा। फिर हम आत्मा ऐसे चक्र लगाती हैं। वह तो कह देते हम आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो हम आत्मा। एक भी नहीं जिसको हम सो का अर्थ मालूम हो। तो बाप कहते हैं यह जो मंत्र है यह हरदम याद रहना चाहिए। चक्र बुद्धि में न होगा तो चक्रवर्ती राजा कैसे बनेंगे। हम आत्मा अभी ब्राह्मण हैं। हम सो देवता बनेंगे..... यह तुम कोई से भी जाकर पूछो, कब नहीं बतावेंगे। वह तो 84 का अर्थ भी नहीं समझते हैं। भारत का उत्थान और पतन गाया जाता है। यह ठीक है। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो, सूर्यवंशी, चंद्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ गया है। बीज रूप बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वह इस चक्र में नहीं आते हैं। ऐसे नहीं हम जीवात्मा सो परमात्मा बन जाते हैं। नहीं, बाप आप समान नालेजफुल बनाते हैं। आप समान गॉड नहीं बनाते। इन बातों को बहुत अच्छी रीत समझना है। तब ही बुद्धि में चल सकता है। जिसका नाम स्वदर्शनचक्रधारी रखा है। तुम बुद्धि से समझ सकते हो। हम कैसे 84 के चक्र में आते हैं। इसमें सभी आ जाते। समय भी आ जाता, वर्ण भी आ जाता, वंशावली भी आ जाती तुम बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान होना चाहिए। नॉलेज से ही ऊँच पद मिलता है। नॉलेज होगी तो औरों को भी देंगे। यहां तुम से कोई पेपर आदि नहीं भराई जाती है। उन स्कूलों में जब इम्तहान होते हैं तो पेपर्स

विलायत से आते हैं। वह सभी से भराई जाती है। जो विलायत में पढ़ते होंगे उन्हों का तो वहां ही रिजल्ट निकालते होंगे। उनमें भी कोई बड़ा एड्युकेशन मिनिस्टर होगा जो जांच करते होंगे पेपर्स की। तुम्हारी पे.... की जांच कौन करेंगे? तुम खुद ही करेंगे। खुद को जो चाहिए सो बनाओ। पुरूषार्थ से जो चाहो सो पद बाप से लो। प्रदर्शनी आदि में बहुत लिखाते हैं ना तुम क्या बनेंगे? देवता बनेंगे, बैरीस्टर बनेंगे, क्या बनेंगे? जितना बाप को याद करेंगे, सर्विस करेंगे उतना ही फल मिलेगा। जो अच्छी रीत बाप को याद करते हैं वह समझते हैं हमको सर्विस भी करनी है। प्रजा बनानी है ना। यह राजधानी स्थापन हो रही है। तो उसमें सभी चाहिए। वहां वजीर आदि होते ही नहीं। वजीर की दरकार उनको रहती है जिनकी अकल कम होती है। तुमको वहां राय की दरकार नहीं रहती। बाप के पास राय लेने आते हैं। स्थूल बातों की राय लेने आते हैं, पैसे का क्या करें, धंधा कैसे करें। बाबा कहते हैं बाप कहते हैं यह दुनियावी बातें बाप के पास नहीं ले आओ। हाँ, कहाँ दिल शिकस्त न हो जाये तो कुछ न कुछ आथत देकर बता देते हैं। यह कोई मेरा धंधा नहीं। मेरा तो ईश्वरीय धंधा है तुमको रास्ता बताने का कि तुम विश्व का मालिक कैसे बनो। तुमको मिलती है श्रीमत। वह सभी है आसुरी मत। सतयुग में कहेंगे श्रीमत। कलियुग में आसुरी मत। वह है सुखधाम। वहां ऐसे भी नहीं कहेंगे राजी खुशी हो? तबीयत ठीक है? यह अक्षर वहां होते ही नहीं। यह यहां पूछा जाता है। कोई तकलीफ तो नहीं है? राज़ी खुशी हो? इसमें भी बहुत बातें आ जाती हैं। वहां दुःख है ही नहीं जो पूछा जाये। यह है दुःख की दुनियां। वास्तव में तुम से कोई ऐसे पूछ नहीं सकते। भल माया गिराने वाली है, तो बाप भी मिला है ना तो कहेंगे। क्या तुम खुश खैरीयत भी पूछते हो? हम ईश्वर के बच्चे हमें क्या खुश खैरीयत पूछते हो। परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले बाप की वह मिल गया फिर किसकी परवाह। यह हमेशा याद करना चाहिए। हम किसके बच्चे हैं? यह भी बुद्धि में ज्ञान है जब तक हम पावन बन जावेंगे, तो फिर लड़ाई शुरू हो जावेगी। तुमसे पूछेंगे जरूर; परन्तु तुम कहेंगे हम तो सदैव राज़ी ही हैं। बीमार भी हो तो भी याद में हो तो स्वर्ग से भी यहां जास्ती राज़ी हो। जबकि स्वर्ग की बादशाही देने वाला हमको बाप मिला है जो हमको इतना लायक बनाते हैं। हमको क्या परवाह है। ईश्वर की बच्चों की परवाह। वहां देवताओं को भी परवाह नहीं। देवताओं के ऊपर तो है ईश्वर। तो ईश्वर के बच्चों की क्या परवाह हो सकते हैं। बाबा हमको पढ़ाते हैं, बाबा हमारा टीचर है, सद्गुरु है। बाबा हमारे ऊपर ताज रख रहे हैं। ताजधारी बन रहे हैं। तुम जानते हो कि हमको विश्व का ताज केसे मिलता है। बाप नहीं ताज रखते हैं। यह भी तुम जानते हो। सतयुग में बाप अपना ताज बच्चे पर रखते हैं, जिसको इंग्लिश में कहते हैं क्राउन प्रिंस। बाप का ताज बच्चा पहनेगा। तब तक आस रहेगा कहां बाप मरे तो ताज हमारे ऊपर आवे। बाबा का सुना है एडवर्ड बूढ़ा हुआ, कहे बाप कब मरेगा जो हमको ताज मिलेगा। फिर गुप्त गोली मार दी। जब प्रजा एक/दो को मारती है अपना वरसा लेने, तो कोई राजा के बच्चे ने मारा तो नई बात थोड़े ही है। आस होगी प्रिन्स से महाराजा तो बनूँ। वहां तो ऐसी बात कोई होती नहीं। अपने समय पर कायदे अनुसार बाप बच्चों को देकर किनारा कर लेते हैं। वहां वानप्रस्थ की चर्चा होती ही नहीं। बच्चों को महल आदि बना ही देते हैं। आशाएं सब पूरी हो जाती हैं। तुम समझ सकते हो सतयुग में सुख ही सुख है। प्रैक्टीकल में वह सुख तब पावेंगे जब जावेंगे। वह तो तुम्हीं जानो। स्वर्ग में क्या होगा। एक शरीर छोड़ फिर हम कहां जावेंगे। अभी तुमको प्रैक्टीकल में बाप पढ़ा रहे हैं। तुम जानते हो सच्च2 हम स्वर्ग में जावेंगे। वह तो इतने ईडीयट हैं जो कह देते हैं हम स्वर्ग जाते हैं। पता भी नहीं स्वर्ग किसको नर्क किसको कहा जाता है। दुनियां की लाखों वर्ष आयु दे दी है। सतयुग–त्रेता की आयु इतनी, द्वापर की आयु इतनी, फिर सभी को मिलाकर हिसाब कितना क्लीयर है। वह मूढ़मति मनुष्य कह देते हैं लाखों वर्ष है। फिर मनुष्य की 84 लाख योनियां हैं। जन्म जन्मान्तर यह ज्ञान की बातें ..... गिरते ही आये हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है हम कहां से कहां आकर गिरे हैं। गिरावट ही गिरावट है। बाकी ..... (सत)युग त्रेता में है पवित्र। तो वहां बहुत सुख है। अच्छा, बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग।